7.9.67 ओमशांति रात्रीक्लास

यह तो आवाज जहां–तहां है ही एक राज्य,एक धर्म ,एक भाषा हो। नजदीक आता–जाता है तो यह भी नूंध है कि यह आवाज निकलता ही रहेगा। बाबा ने चित्रों का ऑर्डर लिखा है 4x6 टिन पर बन जावे तो स्टेशन पर लग सके। ल.ना. के चित्र पर लिखना है कि यह डीटी राज्य सुख–शांति ,पवित्रता का अब स्थापन हो रहा है। मुख्य चित्र है ही सीढ़ी ,झाड़,त्रिमूर्ति,गोला। गीता का भगवान कौन?छः चित्र भी हो तो भी हर्जा नहीं है। देहली का बड़ा स्टेशन है। बॉम्बे का बड़ा स्टेशन है। करके 5/7 हजार रुपया का खर्चा होगा। जास्ती कारीगर लगाकर चित्र अच्छे2 बनाने हैं। कनाटप्लेस में यह चित्र लगा देने चाहिए, जो समझे कि 9वर्षों में एक राज्य, एक धर्म ,एक भाषा स्थापन हो रही है। यह सतयुग में ही होता है। सतयुग होता है कलियुग के बाद। अक्षर बड़े हो। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना देवी–देवता धर्म की। इस महाभारत लड़ाई से पहले ही यह वर्सा प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे ही 5/7 चित्रों का कैलेंडर भी बना सकते हो। खर्चा तो होता ही है ना। लड़ाई आदि में कितने पदमों का खर्चा होता है। तुम बच्चों का तो जैसे कि कुछ भी खर्चा नहीं है। वो है बाहुबल। यह है याद बल। म्यूजियम भी देहली में बहुत भभके से हो जो कि मनुष्य समझे कि एक राज्य,एक धर्म अब स्थापन हो रहा है। एनाउंस करना चाहिए। मुख्य स्टेशन पर लगाना चाहिए। कुछ यह सर्विस,कुछ म्यूजियम,कुछ सेंटर तो सर्विस वृद्धि को यूं ही पाती ही जावेगी। पुरुषार्थ बिना तो प्रारब्ध मिलती ही नहीं है। कहीं भी जाते हो तो बैज पड़ा ही हुआ हो कि मैसेज भी दे सकें। समझाकर ही तो चीज दी जाती है ना। करोड़ों की अन्दाज में राजधानी बन रही है। कुछ न कुछ ज्ञान मिलेगा तब ही वहां आवेंगे ना। अभी टाइम पड़ा है। बैजेज तो लाख बननी चाहिए। कोई बड़ा आदमी देखा तो अच्छा वाला दे दिया। कोई पैसे भी देंगे। रेल में भी सर्विस कर सकते हैं। मंदिरों में घाट पर भी सर्विस कर सकते हो। टाइम बहुत मिलता है। सिर्फ बच्चों से मेहनत पूजती नहीं। मनुष्य भक्तिमार्ग में एकदम चटक पड़े हैं। भक्ति बिल्कुल तमोप्रधान है। मेले आदि में कितने धक्के खाते हैं। उन्हों की(को) भक्ति की ही खुशी रहती है। यह सर्विस बिल्कुल सिम्पल है। सहज याद और सृष्टि चक्र को जानना है। जितना जो जास्ती सर्विस करते हैं उतना उंच पद पाते हैं। यह भारत की सर्विस है ना और कोई भारत को इतना उंचा उठाय न सके। गायन है कि वंदे मातरम्। तो तुमको कितना खड़ा होना चाहिए। लज्जा करने से भूख मरेंगे 21जन्मों के लिए। अपने लिए ही सब करते हैं। जो करेगा वह पावेगा। 5विकारों को छोड़ना है और बाप से वर्सा लेना है। कोई गंदा काम न करन है। रोज अपना चार्ट बनाने से बच्चों को खुशी होगी। नालेज तो बहुत अच्छी रीत मिल रही है। आत्मा क्या चीज है किसको पता थोड़े ही है। ईश्वर सर्वव्यापी कह देते हैं। जब पता पड़े कि आत्मा अविनाशी है। हरेक आत्मा में अविनाशी पार्ट नूंधा हुआ है। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है, जो रिपीट होता ही रहता है। संगमयुग अभी ही आया है। नई और पुरानी दुनियां के बीच को संगम कहा जाता है। नई दुनियां स्थापन होती। पुरानी दुनियां को विनाश जरूर होना है। अभी कितने अनेक धर्म हैं। अशांति जरूर होगी। सतयुग में तो है ही शांति। शांति देने वाला भी बेहद का बाप है। कोई खड्डे में बैठ जाते हैं। फिर मास बाद निकलेंगे ना। तो अल्पकाल की शांति हुई ना। नशा रहना चाहिए। बाबा हमको पढ़ाते हैं। राजाई के लिए जरूर राजयोग सिखाया होगा। आधा कल्प भारत को वर्सा था। दूसरा कोई धर्म न था। तब गायन है प्राचीन भारत। किसम2 से बच्चों को समझाते रहते हैं। अब चक्र पूरा हुआ। हम घर जाते हैं। दुःख का बंधन खलास। सभी सुख के बंधन में जाते हैं। खुशी की खबरें सुनानी चाहिए। तुम तो दुनियां के सारे चक्र को जानते हो। सारा दिन जिद करो अपन साथ हम बाप को याद करेंगे। जंक को खतम करना है तब फिर बाप के साथ लव होगा। अपनी ही कमाई है। ओम।